OM - 1 - 2020 DELHI FINAL_Page 1 and 2 06/03/2020 6:20 PM Page 9

कथा सरिता...

बुराई जड़ से खत्म करो

किसी नगर में एक आदमी रहता था। उसके आँगन में एक पौधा उग आया। कुछ दिनों बाद वह बड़ा हो गया और उस पर फल लगने लगा। एक बार एक फल पककर नीचे गिर गया। उस फल को एक कुत्ते ने खा लिया। जैसे ही कुत्ते ने फल खाया, उसके प्राण निकल गए। आदमी ने सोचा कोई बात होगी जिससे कुत्ता मर गया, पर उसने पेड़ के फल पर ध्यान नहीं दिया। कुछ समय बाद उधर से एक लड़का निकला। फल देखकर उसके मन में लालच आ गया और उसने किसी तरह फल तोड़कर खा लिया। फल को खाते ही लड़का मर गया। मरे हुए लड़के को देख आदमी की समझ में आ गया कि यह जहरीला पेड़ है। उसने कुल्हाड़ी ली और वृक्ष के सारे फल काटकर गिरा दिए। थोड़े दिन बाद पेड़ में फिर फल लग गए। लेकिन इस बार पहले से भी ज़्यादा बड़े फल लगे थे। आदमी ने फिर कुल्हाड़ी से फल के साथ-साथ शाखाओं को भी काट दिया। परंतु कुछ दिन बाद पेड़ फिर फलों से लद गया। अब आदमी की समझ में कुछ नहीं आया। वह परेशान हो गया। तभी उसके पड़ोसी ने उसे देखा और उसकी परेशानी का कारण पूछा। आदमी ने सारी बातें बता दी।

यह सब सुनकर पड़ोसी ने कहा - तुमने पेड़ के फल तोड़े, उसकी शाखाएं काटी, पर तुम्हारी समझ में नहीं आया कि जब तक पेड़ की जड़ रहेगी तब तक पेड़ रहेगा और उसमें फल आतें रहेंगे। अगर तुम इससे छुटकारा पाना चाहते हो तो इसकी जड़ काटो। तब आदमी की समझ में आया कि बुराई की ऊपरी कांट-छांट से वह नहीं मिटती, उसे तो उसकी जड़ से मिटाना चाहिए। उ स ने कुल्हाड़ी लेकर पेड़ की जड़ को काट दिया और हमेशा के लिए चिंता मुक्त हो गया। इस तरह बुराई की जड़ हमारे मन में होती है। जब तक जड़ को नष्ट नहीं किया जाएगा, मनुष्य को जहरीला बनाने वाले फल आतें रहेंगे।

गुरु महिमा

एक बार की बात है, एक संत थे। जो बहुत ही साधारण तरीके से अपना जीवन निर्वाह करते थे, पर वह बहुत उच्च कोटि के थे। उनके पास 7-8 शिष्य रहते थे। उनमें से एक शिष्य उनके बताए रास्ते पर चलता था। और संत उस शिष्य से बहुत स्नेह रखते थे।

धीरे-धीरे उस शिष्य की ख्याति भी बढ़ने लगी। और सभी लोग उसकी मिसाल देने लगे कि शिष्य हो तो ऐसा। और इन सबसे संत बहुत खुश होते थे। एक दिन शिष्य ने संत से कहा कि मैं कुछ समय एकांत में भक्ति करना चाहता हूँ। तो संत ने कहा तुम यहाँ रह के भी भक्ति कर सकते हो और जैसा तुम उचित समझो। शिष्य ने गुरु से इजाज़त ली और जंगल की ओर एकांत में निकल गया।

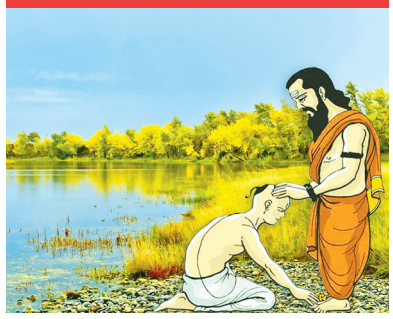

ठीक दस साल बाद वह शिष्य अपने गुरु से वापस मिलने आया। सबको मालूम पड़ने पर भी भीड़ इक्ट्ठा हो गई। और शिष्य की खूब तारीफ हुई और उस शिष्य की चर्चा सभी जगह चल रही थी। संत भी अपने प्यारे शिष्य से मिलकर बहुत खुश थे। उस शिष्य ने कुछ अद्भुत कारनामे भी करे तो वह प्रचलित हो गया। सब जगह शिष्य की चर्चा होने लगी। और दूर-दूर से लोग उससे मिलने आने लगे। इधर संत को चिंता सताने लगी। एक दिन गुरु और शिष्यों को पास ही एक गांव में जाना था। रास्ते में एक नदी पड़ती थी। उस नदी को पार करने के लिए नाव से जाना पड़ता था। गुरु और सभी शिष्य नाव का इंतज़ार कर रहे थे। और गाँव के भी बहुत सारे लोग थे। उस शिष्य ने गुरु से कहा कि क्यों ना हम पानी पर चल कर नदी पार कर लें। इस पर गुरु ने कहा पानी पर कैसे चल सकते हैं सब डूब जायेंगे। इतने में शिष्य पानी की ओर बढ़ा और पानी पर चलने लगा। और उसने सबको कहा कि तुम भी आ जाओ, पर किसी की हिम्मत नहीं हुई। शिष्य को पानी पर चलता देख कर सब हैरत में पड़ गए। और शिष्य की वाहवाही होने लगी। शिष्य ने पानी पर चलकर नदी पार कर ली। और गुरु और बाकी शिष्य ने नाव में बैठकर नदी को पार किया। सभी शिष्यों ने अपने गुरु की चिंता को पढ़ लिया था। जब वापस अपनी कुटिया में सब आ गये तो शिष्यों ने गुरु से कहा कि आपके शिष्य ने आपका नाम रोशन कर दिया और आप खुश नज़र नहीं आ रहे हैं। इतने में वह शिष्य भी वहाँ आ गया और बोला गुरुवर मुझसे कोई गलती हुई हो तो बताइये। गुरु ने कहा कि नहीं कोई गलती नहीं हुई है। शिष्य बोला, या तो मेरी प्रसिद्धि से आपको कोई परेशानी है, क्योंकि आपके चेहरे से साफ झलक रहा है कि आप परेशान हैं।

संत ने कहा - मैं बोलना नहीं चाहता था पर तुमने यह कहकर मुझे मजबूर कर दिया। संत ने शिष्य से कहा तुमने जो पानी पर चलकर नदी पार करी तुम्हें बहुत महँगी पड़ी। शिष्य बोला कैसे - मैंने तो नदी फ्री में पार कर ली और मुझे इज्जत भी मिली। गुरु ने हँस कर कहा - जो चीज़ मात्र पाँच रूपये में पार की जा सकती थी, उसके लिए तुमने अपने दस साल की भक्ति उस चीज़ में लगा दी। तुमने ज़रा-सी सिद्धि के पीछे अभी तक के तप-त्याग को बर्बाद कर लिया। और अपनी भक्ति का सौदा कर लिया और ईश्वर के मिलन के सारे रास्ते बंद कर लिए।

ये सुनकर शिष्य गुरु के चरणों में गिर पड़ा और दहाड़ मारकर रोने लगा। गुरु को उस पर दया आ गयी। उन्होंने उसे अपने पास रख लिया, पर वो अपने जीवन का अमूल्य समय और तपस्या को खो चुका था।

स्मरण रहे

एक फकीर था उसके दोनों बाजू नहीं थे। उस बाग में मच्छर भी बहुत होते थे। मैंने कई बार देखा उस फकीर को। आवाज़ देकर, माथा झुकाकर वह पैसा मांगता था। एक बार मैंने उस फकीर से पूछा - "पैसे तो माँग लेते हो, रोटी कैसे खाते हो?"

उसने बताया - "जब शाम उतर आती है तो उस नानाबाई को पुकारता हूँ, ओ जुम्मा! आके पैसे ले जा, रोटियाँ दे जा। वह भीख के पैसे उठा ले जाता है और रोटियाँ दे जाता है।"

मैंने पूछा - "खाते कैसे हो बिना हाथों के?"

वह बोला - "खुद तो खा नहीं सकता। आने-जाने वालों को आवाज़ देता हूँ, ओ जाने वालों! प्रभु तुम्हारे हाथ बनाए रखे, मेरे ऊपर दया करो। रोटी खिला दो मुझे, मेरे हाथ नहीं हैं। हर कोई तो सुनता नहीं लेकिन किसी-किसी को तरस आ जाता है। वह प्रभु का प्यारा मेरे पास आ बैठता है। ग्रास तोड़कर मेरे मुँह में डालता जाता है, मैं खा लेता हूँ।"

सुनकर मेरा दिल भर आया। मैंने पूछ लिया - "पानी कैसे पीते हो?"

उसने बताया - "इस घड़े को टांग के सहारे झुका देता हूँ तो प्याला भर जाता है। तब पशुओं की तरह झुककर पानी पी लेता हूँ।"

मैंने कहा - "यहाँ मच्छर बहुत हैं। यदि मच्छर लड़ जाए तो क्या करते हो?"

वह बोला -"तब शरीर को ज़मीन पर रगड़ता हूँ। पानी से निकली मछली की तरह लोटता और तड़पता हूँ।"

देखिए केवल दो हाथ न होने से कितनी दुर्गति होती है! अरे! इस शरीर की निंदा मत करो। यह तो अनमोल रत्न है। शरीर का हर अंग इतना कीमती है कि संसार का कोई भी खज़ाना उसका मोल नहीं चुका सकता।

औरंगाबाद-बिहार। शिव जयंती के अवसर पर दीप प्रज्वलित करते हुए सदर विधायक आनंद शंकर सिंह, अति. जिला न्यायाधीश संजय कुमार उपाध्याय, ब्र.कु. सविता, ब्र.कु. संगीता तथा ब्र.कु. धनंजय।

हाजीपुर-राजपूत कॉलोनी(बिहार)। शिव जयंती के अवसर पर आयोजित 'शिव संदेश शोभा यात्रा' को हरी झंडी दिखाते हुए नगर पार्षद निकेत कुमार सिन्हा। साथ हैं सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अंजली, ब्र.कु. आरती तथा अन्य।

झिंझक-कानपुर(उ.प्र.)। 84वें शिव जयंती महोत्सव में नगर पालिका चेयरमैन संतोष त्रिपाठी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अर्चना, ब्र.कु. साधना, ब्र.कु. रीना तथा अन्य।

दिल्ली-बवाना। महाशिवरात्रि पर शिव ध्वजारोहण के पश्चात् मंच पर सी.आई.एस.एफ. के डिप्टी कमांडेंट ओमप्रकाश, वाल्मीकि डॉस्पिटल पूठ से एम.एस. डॉ. सागर, ब्र.कु. चन्द्रिका तथा अन्य।

बिहार शरीफ-बिहार। महाशिवरात्रि पर 'शिव संदेश रथ यात्रा' का शिव ध्वज लहराकर शुभारंभ करते हुए डिप्टी इलेक्शन कमिश्नर निवास जी तथा ब्र.कु. अनुपमा।

बरेली-उ.प्र.। त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव के कार्यक्रम के पश्चात् आई.एम.ए. के अध्यक्ष डॉ. राजेश अग्रवाल को ईश्वरीय सौगात भेंट कर आध्यात्मिक चर्चा करते हुए ब्र.कु. पार्वती।